केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक		प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	(अंकों में)
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13					
14					
15					
16					

S.K. NAIK (PRINCIPAL) V.No.- 000949

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे →

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्राः नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
RAJESH VISHWAKARMA (M.S.T.) Mob.No.- 9685597719 V.No.- 000867	SHILPI MALVIYA (M.S.) HSS KERPANI (SARSALA) V.No.- 000585 Mob.- 7974922212

2

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 1 रिक्त स्थान

उ० (i) - सहस्रबाहु

उ० (ii) - महाकाव्य

उ० (iii) - 10

उ० (iv) - साठ के ऊपर

उ० (v) - जीने की इच्छा

उ० (vi) - अज्ञेय

प्रश्न क्र. 2 सत्य / असत्य

उ० (i) - असत्य ।

उ० (ii) - असत्य ।

उ० (iii) - असत्य ।

उ० (iv) - सत्य ।

उ० (v) - सत्य ।

उ० (vi) - सत्य ।

मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 3 सही जोड़ी

	(क)		(ख)
(i)	संगतकार	–	मंगलेश डबराल
(ii)	द्वंद्व के प्रकार	–	2
(iii)	बिसमिल्ला खाँ	–	शहनाई वादक
(iv)	गले का हार होना	–	बहुत प्यारा
(v)	संधि के प्रकार	–	3
(vi)	बालम खीरा	–	लखनऊ

प्रश्न क्र. 4 एक वाक्य में उत्तर

उ० (i) – फाल्गुन की आभा अट नहीं रही है।

उ० (ii) – प्रबंध के 3 भेद होते हैं – महाकाव्य, खण्डकाव्य तथा आख्यानक गीत।

उ० (iii) – नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की प्रतिमा कस्बे के चौराहे में लगवा दी गई। बीचोंबीच

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADES

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र

उ० (iv) – "काला अक्षर भैंस बराबर" का अर्थ है - निरक्षर व्यक्ति।

उ० (v) – बाबू जी समान रामनामा बही में हजार बार राम नाम लिखते थे।

उ० (vi) – "साना - साना हाँथ जोड़ि" पाठ के आधार पर पहाड़ी कुत्ते केवल चाँदनी रात में ही भौंकते हैं।

प्रश्न क्र. 5 सही विकल्प

उ० (i) – (ब) सूरदास
उ० (ii) – (ब) फसल को
उ० (iii) – (ब) उत्साह
उ० (iv) – (स) हर पंद्रहवें दिन
उ० (v) – (ब) 3
उ० (vi) – (अ) मणि

5

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 6 अथवा

उ० → संगतकार निम्नलिखित रूपों में मुख्य गायक - गायिकाओं की मदद करते हैं।

1) जब मुख्य गायक / गायिका स्थायी पंक्ति को छोड़कर कहीं और भटक जाते हैं या कहीं और लीन हो जाते हैं तब संगतकार ही मुख्य पंक्ति को अलापकर उन्हें सँभालता है।

2) जब मुख्य गायक / गायिका तारसप्तक में गाते हैं तब कुछ समय बाद उनकी आवाज बैठने लगती है गाने की इच्छा समाप्त होने लगती है, फिर संगतकार ही उन्हें ढाँढस बँधाता है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,M
मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 7

उ० → खण्डकाव्य प्रबन्ध काव्य का प्रमुख भेद । वह काव्य जिसमें जीवन के किसी मार्मिक अंश या घटना का पूर्णता के साथ चित्रण होता है वह खण्डकाव्य कहलाता है। खण्डकाव्य न तो जीवन का खण्डित चित्र प्रस्तुत करता है और न ही महाकाव्य का खण्ड मात्र है। सीमित आकार में पूर्णता इसका अनिवार्य धर्म है।

उदाहरण → तुलसीदास - पार्वती मंगल
मैथिलीशरण गुप्त - पंचवटी
रामनरेश त्रिपाठी - पथिक

7

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 8

उ० → जब किसी के अजीब हाव-भाव, वेशभुषा, ढंग आदि को देखकर हँसी आती हो अर्थात 'हास' नामक स्थायी भाव उत्पन्न हो वहाँ हास्य रस होता है।
इसका स्थायी भाव हास होता है। जब हास नामक स्थायी भाव का संचारी भाव, विभाव, अनुभाव से संयोग होता ~~था~~ तब हास्य रस की उत्पत्ति होती है।

उदाहरण → इस दौड़-धुप में क्या रखा, आराम करो आराम करो
आराम जीवन की कुंजी, इससे न तपेदिक होती है
आराम सुधा की एक बुँद, तन का दुबलापन खोती है
इसलिए तुम्हें समझाता हूँ, मेरे अनुभव से काम करो।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MA

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 9

उ० →

आत्मकथा	जीवनी
लेखक आत्मकथा में स्वयं की कहानी लिखता है।	लेखक जीवनी में किसी दुसरे व्यक्ति की कहानी लिखता है।
लेखक आत्मकथा में अपने भावों एवं विचारों का वर्णन करता है	लेखक जीवनी में तथ्यों का वर्णन करता है।
लेखक द्वारा कथात्मक शैली में लिखी जाती है।	लेखक द्वारा वर्णात्मक शैली में लिखी जाती है।
उदा० - महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित 'मेरी जीवन गाथा'।	उदा. - अमृत राय द्वारा रचित 'कलम का सिपाही'।

Copier Label A4ST-16 99.1x33.9mmx16

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATI

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 10

उ० → भटियार खाने का अर्थ होता है वह स्थान जहाँ सदैव चूल्हा जलता रहता हो या असभ्य लोगों का स्थान । अतः लेखिका मन्नू भंडारी के पिता रसोई घर को भटियार खाना इसलिए कहते हैं क्योंकि वहाँ भी सदैव चूल्हा ~~ल~~ जलता रहता है, खाना पकाना चलता है । ~~उनकी~~ उनके अनुसार रसोईघर में रहने का अर्थ है अपनी क्षमताओं को चूल्हे में झोंकना अतः वे पहले अर्थ के संदर्भ में रसोई को भटियारखाना कहते हैं।

प्रश्न क्र. 11

उ० → जब भगत जी का एकमात्र बेटा मरा तब उन्होंने कोई शोक नहीं मनाया बल्कि अपने बेटे के शव को चटाई में लिटाकर, उस पर सफेद चादर डाल दी साथ ही कुछ फूल और तुलसीदल उसके ऊपर डाल दिया । फिर उसके सिरहाने एक चिराग ~~ल~~ जला दिया और उसके सामने बैठकर ~~खँभ~~ खँजड़ी बजाने लगे तथा बीच-बीच में अपनी ~~बहु~~ पतोहु को समझाते की यह शोक मनाने का नहीं उत्सव मनाने का अवसर क्योंकि आत्मा परमात्मा से मिल गई है । इस तरह उन्होंने अपने बेटे की मृत्यु पर भावनाएँ व्यक्त की ।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MA

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 12

उ० → स्वयंप्रकाश

(i) दो रचनाएँ → आदमी जात का आदमी, सूरज कब निकलेगा

(ii) भाषा शैली → आँठवें दशक में उभरे स्वयं प्रकाश समकालीन कहानियों के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। उनकी भाषा सरल, सहज और सुबोध है। उन्होंने लोक प्रचलित खड़ी बोली का प्रयोग किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी शब्दों का प्रयोग किया है। हास्य - व्यंग्य उनकी रचनाओं के ~~प्रधान~~ प्रधान विषय रहे। उनकी किस्सागोई शैली में लिखी ~~गई~~ गई कहानियाँ हिंदी के वाचिक परंपरा को सुदृढ़ बनाती हैं।

2

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 13

उ० →

(i) जिसके आने की तिथि पता न हो - अतिथि ।
(ii) जो सब कुछ जानता हो - सर्वज्ञ ।

प्रश्न क्र. 14

उ० → श्वेत पताकाएँ → जब किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु हो जाती है तब 108 श्वेत पताकाएँ (जिन पर मन्त्र लिखे होते हैं) शहर से दूर किसी शान्त स्थान पर फहरा दी जाती हैं। इन्हें कभी निकाला नहीं जाता ये स्वत: ही नष्ट हो जाती हैं।

रंगीन पताकाएँ → जब किसी व्यक्ति द्वारा किसी नए कार्य का शुभारंभ किया जाता है तब रंगीन पताकाएँ फहरा दी जाती हैं।

इस तरह विभिन्न पताकाओं का फहराना अलग - अलग अवसरों की ओर संकेत करता है।

योग पूर्व पृष्ठ
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL
माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 15

उ० → प्रगतिवाद की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं। -

1) शोषकों के प्रति घृणा तथा शोषितो के प्रति करुणा → प्रगतिवादी कवि यह मानते थे कि पूँजीवादी व्यवस्था शोषण को जन्म देती है, सामाजिक विषमता पैदा करती है अतएव शोषकों का अंत होना चाहिए।

2) यथार्थ का चित्रण → यथार्थ का चित्रण करना इस युग के कवियों का ध्येय रहा। समाज में, राज्य में जो कुछ हुआ उसका साफ - साफ बयान करना इनका लक्ष्य था।

3) रूढ़िवाद का विरोध → प्रगतिवाद रूढ़िवाद का कट्टर विरोधी है।

मध्यप्रदेश
BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 16

उ० →

सूरदास

दो रचनाएँ → सूरसागर, सूरसारावली

भावपक्ष → सूरदास सगुण भक्तिधारा के कृष्णाश्रयी कवि हैं। इनकी भक्ति ~~ख~~ साख्य भाव की है। कृषि तथा पशुपालन जीवनवाले भारतीय मनुष्यों का दैनिक अंतरंग चित्र सूर की रचनाओं में मिलता है। वे वात्सल्य तथा श्रृंगार रस के ~~न~~ श्रेष्ठ कवि हैं। कृष्ण - गोपी प्रसंग के माध्यम से उन्होंने स्वाभाविक प्रेम की अभिव्यंजना की है तथा सामान्य मनुष्यों को हीनता भाव से मुक्त किया है। सूरदास को 'वात्सल्य सम्राट' भी कहा जाता है।

B
S
E

मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 17

उ० → गोपियाँ उद्धव से योग की शिक्षा ~~ऐसे~~ ऐसे लोगों को देने के लिए कहती हैं जिनके मन अस्थिर हैं अर्थात चलायमान है तथा चकरी की तरह गोल - गोल घुम रहे हैं। वे कहती हैं कि यह योग किसी कड़वी ककड़ी के समान हैं जो फेंकने योग्य हैं तथा गोपियाँ यह भी स्पष्ट कर देती हैं कि उन्हें इस योग की ~~कोइ~~ कोई भी जरूरत नहीं हैं क्योंकि उनका मन कृष्ण पर स्थिर है।

[illegible] पृष्ठ [illegible] पृष्ठ [illegible]क कुल [illegible]यक

मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 18

उ० संदर्भ → प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग 2' ~~से~~ ~~ली~~ के राम लक्ष्मण ~~पु परसुयम~~ परशुराम संवाद से ली गई हैं। इसके कवि तुलसीदास हैं।

प्रसंग → यहाँ पर शिवधनुष टूटने से क्रोधित परशुराम को राम शान्त करने की कोशिश करते हैं। ~~तो वहीं लक्ष्मण उन पर व्यंग्य करते हैं।~~

व्याख्या → प्रस्तुत पंक्तियों में भगवान राम क्रोधित परशुराम से कहते है कि 'हे मुनिवर! धनुष को तोड़ने वाला आपका ही कोई सेवक होगा अतः आप शान्त हो जाइए।' इस पर क्रोधित परशुराम कहते हैं कि 'राम, ~~सेवक~~ सेवक तो वह होता है जो सेवा का कार्य करे लेकिन शत्रु के समान कार्य करने वाले से तो लड़ाई ही की जानी चाहिए। और हाँ राम ~~जिसम~~ जिसने भी यह शिव धनुष तोड़ा है वह सहस्रबाहु के समान मेरा शत्रु है ~~अर्थात~~ अर्थात सबसे बड़ा शत्रु है।

काव्य सौन्दर्य → 1) अवधी भाषा का प्रयोग हुआ है।
2) रौद्र रस प्रधान है।
3) अनुप्रास अलंकार का प्रयोग काव्य को सुंदर बनाता है।

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

जैसे → 'आयेसु काह कहिअ किन मोही ।' में क वर्ण की आवृति ।

प्रश्न क्र. 19

उ० ~~प्र~~ संदर्भ → प्रस्तुत पंक्तियाँ गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'क्षितिज भाग २' के गद्य खण्ड के 'नेताजी का चश्मा' नामक पाठ से ली गई हैं । इसके लेखक स्वयं प्रकाश हैं ।

प्रसंग → यहाँ पर हालदार साहब आज की पीढ़ी के बारे में सोचते हैं जो राष्ट्रभक्तों पर हँसती है ।

व्याख्या → हालदार साहब बार बार सोचते हैं कि जो व्यक्ति अपने देश का भक्त होता है अपने देश के लिए मर मिटने को तैयार रहता है अपने देश के लिए अपनी गृहस्थी-घर, जवानी यहाँ तक की अपनी जिंदगी को भी त्याग ~~देते~~ देता है आज उस पर भी लोग हँसते हैं । उसका मजाक उड़ाते हैं । ऐसे लोग का कुछ नहीं हो सकता जो राष्ट्रभक्त का सम्मान नहीं करते वे लोग सदैव अपने लिए बिकने के मौके ढूढ़ते हैं ।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

विशेष → 1) लोकप्रचलित खड़ी बोली का प्रयोग है।
2) भाषा सरल, सहज तथा प्रभावपूर्ण है।
3) राष्ट्रभक्ति का उद्देश्य निहित है।

प्रश्न क्र. 20 अथवा

शिक्षक व छात्र के बीच संवाद

छात्र :- सुप्रभात शिक्षक !

शिक्षक :- सुप्रभात ! आज हम कम्प्यूटर के बारे में पढ़ेंगे।

छात्र :- वह क्या होता है सर ? क्या यह कोई मशीन है ?

शिक्षक :- हाँ - हाँ यह एक मशीन है जो बड़ी - बड़ी गणनाएँ जल्दी ही त्रुटिहीन तरीके से करता है। इसे हिंदी में संगणक कहा जाता है।

छात्र :- सर इसका उपयोग कहाँ होता ?

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

शिक्षक :- आज के इस नवयुग मे इसका बहुत महत्व है। इसे विविध क्षेत्रों मे प्रयोग किया जाता है जैसे - शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंक इत्यादि।

छात्र :- अच्छा! सर मैं अब समझा कि यह वही है जिसका प्रयोग हमारे विद्यालय के कार्यालय में होता है।

शिक्षक :- हाँ तुमने सही कहा। इसका प्रयोग हम अपने कार्यालय में विद्यार्थियों की जानकारियाँ संग्रहित करने के लिए करते हैं।

छात्र :- सर इसकी और कोई विशेषता है क्या?

शिक्षक :- इसकी एक यह विशेषता है कि यह हमें दुनिया के विभिन्न जगहों का दृश्य दिखा सकता है, मनोरंजन करा सकता है। यह आधुनिक जीवन में सबसे महत्वपूर्ण है।

छात्र :- मैं समझ गया सर। इतनी जानकारी देने के लिए आपका बहुत - बहुत धन्यवाद। अब मैं इसके बारे में और ~~सीखुँगा~~ सीखूँगा।

शिक्षक :- बहुत अच्छे। चलो अब आज की कक्षा समाप्त करते हैं।

मध्यप्रदेश

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 21

(i) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है - 'एकाग्र मन की एकाग्रता तथा विचलन'।

उ० (ii) उत्कृष्ट पद की प्राप्ति के लिए एकाग्र मन से पढ़कर परीक्षा में उच्चतम श्रेणी प्राप्त करना आवश्यक है।

उ० (iii) → आज के युग में मन एकाग्र नहीं हो पाता जब कोई छात्र ~~दृढ़~~ दृढ़ निश्चय के साथ पढाई करता है तब उसका मन कहीं न कहीं भटक जाता है ~~उसे~~ वह ठीक से पढ़ नहीं पाता। मन का यही विचलन बुद्धि को एकाग्र नहीं होने देता है।

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 22

उ० → प्रति,
नगरपालिका अधिकारी
जिला - मऊगंज (म.प्र.)

विषय → वार्ड में गन्दगी दूर करवाने हेतु शिकायती पत्र।

महोदय,
मैं आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूँ कि हमारे वार्ड में अत्यधिक गन्दगी फैली है। यहाँ सड़कें झाड़ी नहीं जाती हैं। नालियाँ साफ नहीं की जाती हैं। नालियों से बहकर गन्दा पानी सड़क पर आ जाता है। दुर्गंध तथा मच्छरों से हम सभी का हाल खराब है। जगह - जगह कूड़ों के ढेर लगे हैं। कचरे वाली गाड़ी भी रोज नहीं आती है। इन समस्यों के कारण हम त्रस्त हैं।

अत: श्रीमान जी से निवेदन है कि तत्काल प्रभाव से हमारे वार्ड - 07 इन्दिरानगर की सफाई के आदेश दिए जाए।

धन्यवाद।

B
S
E

(21) + कुल

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र

निवेदक

नाम - आयुष द्विवेदी

दिनाँक - 27|02|2025

B
S
E

प्रश्न क्र. 23

वर्तमान समय में विज्ञान का महत्व

रूपरेखा :-

1 प्रस्तावना
2 विज्ञान के वरदान
3 विज्ञान के उपयोग
4 विभिन्न क्षेत्र तथा विज्ञान
5 विज्ञान के दुष्परिणाम
6 उपसंहार

22 अंक

प्रश्न क्र.

" सावधान मनुष्य को विज्ञान का यह उपहार ।
हैं सुवासित प्रगति हैं, सब दिशा संसार ॥ "

1 प्रस्तावना ⇒ आज का युग विज्ञान का युग हैं। विज्ञान द्वारा प्राप्त साधनों से मनुष्य ने अभुतपूर्व उन्नति की हैं। आज जल, थल, नभ सभी जगह विज्ञान की पताका लहरा रही हैं। आधुनिक जीवन तथा विज्ञान एक दूसरे के पर्याय बन गए हैं। विज्ञान द्वारा मनुष्य को असीम शक्ति प्राप्त हुई हैं।

2 विज्ञान के वरदान ⇒ आज विज्ञान द्वारा प्राप्त साधन मनुष्य को वरदान सिद्ध हो रहे हैं। फिर भी हमारे आराम तथा इच्छाओं की सीमाएँ बढ़ती ही जा रही हैं। आज विभिन्न ~~क्षे~~ क्षेत्र विज्ञान द्वारा प्रभावित हैं जैसे - कृषि, उद्योग, बैंकिंग, शिक्षा, स्वास्थ्य इत्यादि।

3 विज्ञान के चमत्कार ⇒ ईधंन, सूचना यंत्र, कम्प्यूटर यंत्र इत्यादि साधन जो विज्ञान द्वारा प्राप्त हुए हैं उन्होंने मनुष्य को सक्रिय तथा समपन्न बना दिया हैं। बिजली द्वारा संचालित पंखे, टी.वी. कूलर, हीटर आदि अन्य साधन विज्ञान द्वारा प्राप्त हैं। बिजली से चलने वाली मशीनों द्वारा आज रोजमर्रा के कार्य जैसे कपड़े धोना, सुखाना, सफाई करना संभव हो गया हैं। सूचना

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

क्षेत्र में विज्ञान ने क्रान्ति ला दी हैं।

"आज का विज्ञान कल की तकनीकि हैं।"

4) विज्ञान तथा अन्य क्षेत्र - आज विज्ञान ने विविध उपकरण देकर कृषि की उत्पादकता को कई गुना बढ़ा दिया हैं। उद्योग क्षेत्र में भी क्रान्ति आ गई हैं। विविध मशीनों द्वारा कार्य जल्दी हो जाते हैं। आज इन्टरनेट सुविधा द्वारा समूचे विश्व को एक घर बना दिया गया हैं। आज हम पहले से अत्यंत तीव्र हो गए हैं। पहले जो दूरियाँ सालों में पूर्ण होती थी वो आज घण्टों मे पूरी हो जाती हैं। इस तरह विज्ञान ने आधुनिक जीवन में क्रान्ति ला दी हैं।

5) विज्ञान के दुष्प्रभाव - आज विज्ञान का प्रयोग मनुष्य विनाश के लिए भी कर रहा हैं। हिरोशिमा नागसाकी की विनाश लीला अभी हम भूले नहीं हैं कि कई और युद्ध भी शुरू हो गए हैं। विज्ञान द्वारा दिए गए उपकरण बहुत प्रदूषण फैला रहे हैं जिससे साँस लेना तक भी दुभर हो गया हैं।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH

प्रश्न क्र.

6) उपसंहार → आज क इस आधुनिक युग जहाँ विज्ञान के इतने लाभ है तो उसकी हानियाँ भी है। यदि इन दुष्परिणामों को नहीं रोका गया तो वह दिन दूर नहीं की पूरे मनुष्य जाति का अंत हो जाए। विज्ञान के कारण ही मनुष्य प्राणियों में श्रेष्ठ कहलाता है लेकिन यदि इसका प्रयोग विनाश के लिए किया गया तो यह हमारे पृथ्वी को बड़ा खतरा होगा।

" विज्ञान एक वरदान भी है और अभिशाप भी। "

BSE